NATIONAL SENIOR CERTIFICATE EXAMINATION
NOVEMBER 2016

HINDI HOME LANGUAGE: PAPER II

MARKING GUIDELINES

Time: 2½ hours 80 marks

These marking guidelines are prepared for use by examiners and sub-examiners, all of whom are required to attend a standardisation meeting to ensure that the guidelines are consistently interpreted and applied in the marking of candidates' scripts.

The IEB will not enter into any discussions or correspondence about any marking guidelines. It is acknowledged that there may be different views about some matters of emphasis or detail in the guidelines. It is also recognised that, without the benefit of attendance at a standardisation meeting, there may be different interpretations of the application of the marking guidelines.

IEB Copyright © 2016

भाग क

प्रश्न एक

१. निम्नलिखित चार कविताओं में से किन्हीं <u>दो</u> के पूछे गये प्रश्नों को हिन्दी में दीजिए ।

कविता ः नाविक से ः

१.१ कवि शिवमंगल ने "नाविक से" कविता में मनुष्य को क्या सन्देश दिया है । ईस आधार पर कविता में से उचित पंक्तियों चुन कर व्याख्य कीजिए ।

कविता का अर्थ

(1) तूफानों की ओर - - - - - - - - - - - यौवन मचला है

प्रसंग:- प्रस्तुत पद्य में कवि डॉ॰ शिवमंगल सिंह "सुमन" नाविक के द्वारा मनुष्य को संदेश देते हुए कह रहे हैं - - -

अर्थ:- हे नाविक, आज तुम अपनी नाव के चप्पू को तूफान की तरफ ले चलो, क्योंकि आज समुद्र में पानी आँधी की तरह बहुत तेज है। समुद्र में बहुत भयंकर तूफान उठा हुआ है और दूर से लहरें ऐसे दिखाई दे रही हैं जैसे किसी ने जहर उनमें मिला दिया हो और उनका रंग भी सफेद दिखाई दे रहा है। लहरें खुशी के कारण ऐसे मचल रही हैं जैसे उनमें जवानी आ गई हो और मस्त और खुश होकर तेजी से इधर-उधर मचल रही है।

आज हृदय में - - - - - - - - - - नाविक निज पतवार

प्रसंग:- इस पद्य में कवि सागर की लहरों और मन में उठने वाले भावों की तुलना करते हुए कह रहे हैं कि

(१०)

भी। हे नाविक, तुम अपनी नाव को तूफानों की तरफ ले चलो, घबराओ मत। हे मनुष्य तुम्हारा जीवन भी इन तूफानों की तरह है, जैसे समुद्र में तूफान उठता, हलचल होती है उसी प्रकार मनुष्य का जीवन भी कठिनाइयों से भरा है। कठिनाइयों को पार कर ही मनुष्य का जीवन भी सुखमय बनता है, ज्वार की तरह समुद्र के, मनुष्य के जीवन में भी उतार और चढ़ाव आते रहते हैं और मनुष्य उन्हें सहन कर आगे बढ़ता रहता है और डरता नहीं और नही नाविक की तरह उसे घबराना चाहिए।

3. सागर की अपनी ------ नहीं रुकता है।

प्रसंग :- इस पद्य में कवि नाविक को सम्बोधित करते हुए कह रहा है कि ---

अर्थ :- जब सागर अपनी पूरी शक्ति को लगा कर तेजी से बहता है उसमें तूफान और लहरें तेजी से इधर-उधर घूमती हैं परन्तु नाव को चलाने वाला नाविक इन तूफानों को पार करता हुआ अपनी नाव को आगे बढ़ाता रहता है और थकता नहीं है। वह इन गहरे तूफानों को पार कर अपना चप्पू पानी में चलाता रहता है जब तक उसके शरीर में आखरी साँस भी है वह अपने चप्पू को पानी में चलाता रहता है और अपने हाथ को कभी नहीं रोकता है और अपनी नाव को बचा कर अपनी पूरी शक्ति लगाकर तूफानों को पार करता हुआ किनारे पर या अपनी मंजिल तक ले आता है।

[१०]

अथवा

१.२ निम्नलिखित पंक्तियों जो "*नाविक से*" कविता से निकाला गया है अपने शब्दो मे हिन्दी में समझाइए ः

(क) "*आज हृदयमें और सिन्धमें, साथ उठा है ज्वार।*"

आज समुद्र के भीतर मन में दोनों। तूफन उठ खड़ा हुआ है। मन भी अशांत है और समुद्र भी। हे नाविक तुम अपनी नाव को तूफानों की तरफ ले चलो घबराओ मत। हे मनुष्य तुम्हारा जीवन भी इन तूफान उठता हलचल होती है। (३)

(ख) *"आज सिन्धुने विष उगला हैं। "*

समुद्र में भयंकर तूफान उठने के कारण पानी का बहाव इतना तेज है और पानी का रंग दूध से ऐसा सफेद लग रहा है जैसे उससे किसी ने जहर मिला दिया हो। उससे सफेद तेजी से उठ रहे हैं। (३)

(ग) "जब तक सॉसोमें स्पन्दन हैं।" । अपने शब्दों में समझाइए।

जब तक नाविक के शरीर में आखरी सॉस है तब तक वह अपना साहस नहीं तोड़ता हैं और जी जान से अपनी नाव और अपनी रक्षा करता है। (४)

[१०]

अथवा

१.३ **कविता ः श्री राम हनुमान मिलन**

" मैं तो आपकी माया के कारण भूला भटका फिरता हूँ। इसी से मैंने अपने प्रभु को नहीं पहचाना।" इस सुन्दर दृश्य को अपने शब्दों में श्री राम और हनुमान का मिलन पर चर्चा कीजिए।

(Any 5 of the points below can be credited.)

IEB Copyright © 2016

इहाँ हरी निसिचर बैदेही । बिप्र फिरहिं हम खोजत तेही ।
आपन चरित कहा हम गाई । कहहु बिप्र निज कथा बुझा

यहाँ वन में (मेरी पत्नी) जानकी को कोई राक्षस चुरा ले ब्राह्मण ! हम उसे ही ढूँढ़ते फिरते हैं । हमने तो अपना चरित्र अब हे ब्राह्मण ! आप अपनी कथा समझाकर कहिए ! ॥२॥

प्रभु पहिचानि परेउ गहि चरना । सो सुख उमा जाइ नहि बरना
पुलकित तन मुख आव न बचना । देखत रुचिर बेष कै रचना ॥

(अपने आराध्य) प्रभु को पहचानकर हनुमान्‌जी उनके चरण पकड़ पृथ्वी पर गिर पड़े । (शिवजी कहते हैं –) हे उमा ! उस सुख का व नहीं किया जा सकता । उनका शरीर पुलकित है और उनके मुख से व नहीं निकलते । वे अपने प्रभु के सुन्दर-रुचिर वेष की रचना देख हैं ! ॥३॥

पुनि धीरजु धरि अस्तुति कीन्ही । हरष हृदय निज नाथहि चीन्ही ॥
मोर न्याउ मैं पूछा साईं । तुम्ह पूछहु कस नर की नाईं ॥

फिर उन्होंने धैर्यपूर्वक स्तुति की । अपने स्वामी को पहचान लेने से हृदय हर्षित हो रहा है । (हनुमान्‌जी ने कहा –) हे स्वामी ! मैंने जो पूछा वह मेरा पूछना तो न्यायसंगत था (क्योंकि वर्षों बाद आपके दर्शन हुए; मेरी वानरी बुद्धि आपके तपस्वी-वेष को पहचान न सकी, इसलिए अपनी परिस्थिति से बाध्य हो मैंने कुछ प्रश्न किए), किन्तु आप मनुष्य की तरह कैसे पूछ रहे हैं ? ॥४॥

तव माया बस फिरौं भुलाना । ता तें मैं नहि प्रभु पहिचाना ॥

मैं तो आपकी माया के कारण भूला-भटका फिरता हूँ, इसीसे मैंने अपने प्रभु को नहीं पहचाना ॥५॥

हे नाथ ! यद्यपि मुझमें अनेक अवगुण हैं, फिर भी सेवक स्वामी में न पड़े – आप उसे न भूलें । हे नाथ ! आपकी माया से आपही की अनुकम्पा से निस्तार पा सकता है ॥१॥

चौ. –आगे चले बहुरि रघुराया । रिष्यमूक पर्बत नियराया ॥
तहँ रह सचिव सहित सुग्रीवा । आवत देखि अतुल बल सींवा ॥

(उस पम्पासर से) श्रीरघुनाथजी फिर आगे चले और ऋष्यमूक पर्वत के निकट आ गए । वहाँ (उस पर्वत पर) मन्त्रियों के साथ सुग्रीव रहते थे । अतुल बल की सीमा श्रीरामचन्द्रजी और लक्ष्मणजी को आते देख – ॥१॥

अति सभीत कह सुनु हनुमाना । पुरुष जुगल बल रूप निधाना ॥
धरि बटुरूप देखु तैं जाई । कहेसु जानि जियँ सयन बुझाई ॥

सुग्रीव ने अत्यन्त भयभीत होकर कहा – हे हनुमान ! सुनो, ये दोनों पुरुष बल और रूप के घर हैं । तुम ब्रह्मचारी का रूप धरकर जाओ और देखो । फिर अपने मन में सही बात जानकर मुझे संकेत से समझाकर कह देना ॥२॥

पठए बालि होहिं मन मैला । भागौं तुरत तजौं येह सैला ॥
बिप्ररूप धरि कपि तहँ गएऊ । माथ नाइ पूछत अस भएऊ ॥

यदि वे मन के मैले बालि के भेजे हुए हों तो मैं इस पर्वत को त्यागकर अविलंब भाग जाऊँ । (यह सुनकर) हनुमान्‌जी ब्राह्मण के वेष में वहाँ गये और नतमस्तक हो इस प्रकार पूछने लगे – ॥३॥

को तुम्ह स्यामल गौर सरीरा । क्षत्रीरूप फिरहु बन बीरा ॥
कठिन भूमि कोमल पद गामी । कवन हेतु बिचरहु बन स्वामी ॥

हे वीरों ! साँवले और गोरे शरीरवाले आप दोनों कौन हैं, जो क्षत्रियों के वेष में वन में फिर रहे हैं ? हे स्वामी ! कठोर धरती पर कोमल चरणों (पैदल) चलनेवाले आप किस कारण वन में विचर रहे हैं ? ॥४॥

मृदुल मनोहर सुंदर गाता । सहत दुसह बन आतप बाता
की तुम्ह तीनि देव महँ कोऊ । नर नारायन की तुम्ह दो

आपके कोमल, मनोहर और सुन्दर अङ्ग वन की दुःसह धू को सह रहे हैं । क्या आप ब्रह्मा, विष्णु, महेश – इन तीन दे कोई हैं या आप दोनों नर और नारायण हैं ? ॥५॥

दो. –जगकारन तारन भव भंजन धरनीभार ।
की तुम्ह अखिल भुवन पति लीन्ह मनुज अवतार ॥१

क्या आप जगत् को उत्पन्न करनेवाले, भवसागर से उद्धार करने लोकों (चौदह भुवनों) के स्वामी हैं, जिन्होंने पृथ्वी के भार को के लिए मनुष्य का अवतार लिया है ? ॥१॥

चौ. –कोसलेस दसरथ के जाए । हम पितुबचन मानि बन
नाम राम लछिमन दोउ भाई । संग नारि सुकुमारि सु

(श्रीरामचन्द्रजी ने उत्तर दिया –) हम कोसलराज दशरथजी के पिता की आज्ञा मानकर वन आये हैं । हमारा नाम राम और हम दोनों भाई हैं । हमारे साथ एक सुन्दर सुकुमारी स्त्री थ

[१०]

अथवा

१.४ **कविताः श्री राम हनुमान मिलन**

(क) हनुमानजी कहाँ रहते है ।

हनुमानजी रिष्यमूक पर्वत पर सग्रीव के साथ रहते थे । (२)

(ख) श्री राम जंगल में क्या कर रहे थे ।

श्री राम लक्षमन के साथ सीता के खोज में थे । वे चोदह वर्ष वनवास के लिए वन मेम् आए थे । (३)

(ग) "कठिन भूमि कोमल पद गामी" अपने शब्दों में सम्झाइए ।"

हे वीरों । सॉवले और गोरे शरीरवाले आप दोनों कौन है । जो क्षत्रियों के वेष में वन में फिर रहे हैं । हे स्वामी कठोर धरती पर कोमल चरणों से चलनेवाले आप किस कारण वन में विचर रहे हैं । (५)

[१०]

१.५ **कविता ः** कबीर

(क) निम्नलिखित पंक्तियों जो *कबीर के दोहे में* से निकाला गया है अपने शब्दो मे हिन्दी में समझाइए ः

"साई इतना दीजिए ज में कुटुम्ब समाय ।
मैं भी भूखा ना रहूँ साधु न भूखा जाय ॥"

यह दोहा संतोष करुणा और सेवा की अवधारणा का एक बहुत स्पष्ट दृष्टिकोण के साथ संबंधित है। यह लालच जब कबीर बहुतायत के लिए भगवान पूछता नहीं है। हमें याद है कि कबीर एक पेशेवर बुनकर बच्चों के साथ एक घर धारक था। इस प्रकार प्राथमिक प्रदाता जा रहा है वह अपने कबीले को यह दोहा उनकी प्रतिबद्धता में पता चलता है। इसी समय कबीर सामग्री है। वह लालची नहीं है। वह उसे पर्याप्त है कि उनकी जरूरतों का ख्याल रखना करने के लिए पर्याप्त होगा देने के लिए भगवान से प्रार्थना करता है।

इस दोहा की अंतिम पंक्ति में एक और आयाम कहते हैं। यह करुणा कबीर दूसरों के लिए है पता चलता है। भारत में यह एक परंपरा है कि अगर एक साधु एक घर का दौरा किया घरेलू यकीन है कि वह भूखा जाना नहीं है कर देगा। साधु सचमुच एक साधु सन्यासी एक जो दुनिया त्याग का मतलब है। (६)

(ख) कबीर जीवन के क्षेत्र के बारे में क्या कहते हैं ? ।

ये जीवन के क्षेत्र में शन्ति चाहते थे और सामाजिक क्षेत्र में शन्ति के इच्छुक थे । उन्होंने हिंदू मुसलमानों के बीच में शान्त करने की प्राण पण से चेष्टा की और इस प्रयत्न में सफलता भी मिले । (४)

[१०]

अथवा

१.६ **कविता ः** कबीर

कबीर का काव्य मनुष्य में आत्मविश्वास को जगाने का महत्वपूर्ण माध्यम है ।

विस्तार पूवर्क व्याख्य कीजिए ।

- **कबीरदास जी ने ऐसे दोहों की रचना की है, जो आज भी प्रासंगिक हैं. और ये दोहे आने वाले समय में भी अपना महत्व नहीं खोने वाले हैं. क्योंकि ये दोहे बहुत हीं सरल और स्पष्ट हैं. छोटे-छोटे इन दोहों में जीवन की बड़ी-बड़ी बातें छिपी हुई है, और ये महान अनुभवों का अद्भुत निचोड़ हैं. ये हर किसी के लिए हर काल में अत्यंत हीं लाभकारी हैं. तो आइए संत कबीर के कुछ दोहों को अर्थ के साथ हम जानते हैं.**

- **चाह मिटी, चिंता मिटी मनवा बेपरवाह।**
  जिसको कुछ नहीं चाहिए वह शहनशाह॥
  अर्थात- जिसकी इच्छा खत्म हो गई हो और मन में किसी प्रकार की चिंता बाकी न रही हो. वह किसी राजा से कम नहीं है.
  सारांश : बेकार की इच्छाओं का त्याग करके हीं आप निश्चिन्त रह सकते हैं.

- **माटी कहे कुम्हार से, तु क्या रौंदे मोय।**
  एक दिन ऐसा आएगा, मैं रौंदूगी तोय॥
  अर्थात- मिट्टी कुम्हार से बोलती है कि तुम क्यों मुझे रौंद रहे हो. एक दिन ऐसा आएगा जब मैं तुम्हें रौंदूगी.
  सारांश : मृत्यु तो सबको आनी है, इसलिए घमंड नहीं करना चाहिए.

[१०]

मानवतावादी व्यवहारिक धर्म को बढावा देने वाले कबीर दास जी का इस दुनिया में प्रवेश भी अदभुत प्रसंग के साथ हुआ।माना जाता है कि उनका जन्म सन् 1398 में ज्येष्ठ पूर्णिमा के दिन वाराणसी के निकट लहराता नामक स्थान पर हुआ था ।उस दिन नीमा नीरू संग ब्याह कर डोली में बनारस जा रही थीं, बनारस के पास एक सरोवर पर कुछ विश्राम के लिये वो लोग रुके थे। अचानक नीमा को किसी बच्चे के रोने की आवाज आई वो आवाज की दिशा में आगे बढी। नीमा ने सरोवर में देखा कि एक बालक कमल पुष्प में लिपटा हुआ रो रहा है। निमा ने जैसे ही बच्चा गोद में लिया वो चुप हो गया। नीरू ने उसे साथ घर ले चलने को कहा किन्तु नीमा के मन में ये प्रश्न उठा कि परिजनों को क्या जवाब देंगे। परन्तु बच्चे के स्पर्श से धर्म, अर्थात कर्तव्य बोध जीता और बच्चे पर गहराया संकट टल गया। बच्चा बकरी का दूध पी कर बडा हुआ। छः माह का समय बीतने के बाद बच्चे का नामकरण संस्कार हुआ। नीरू ने बच्चे का नाम कबीर रखा किन्तु कई लोगों को इस नाम पर एतराज था क्योंकि उनका कहना था कि, कबीर का मतलब होता है महान तो एक जुलाहे का बेटा महान कैसे हो सकता है? नीरू पर इसका कोई असर न हुआ और बच्चे का नाम कबीर ही रहने दिया। ये कहना अतिश्योक्ति न होगी कि अनजाने में ही सही बचपन में दिया नाम बालक के बडे होने पर सार्थक हो गया। बच्चे की किलकारियाँ नीरू और नीमा के मन को मोह लेतीं। अभावों के बावजूद नीरू और नीमा बहुत खुशी-खुशी जीवन यापन करने लगे।

कबीर को बचपन से ही साधु संगति बहुत प्रिय थी। कपडा बुनने का पैतृक व्यवसाय वो आजीवन करते रहे। बाह्य आडम्बरों के विरोधी कबीर निराकार ब्रह्म की उपासना पर जोर देते हैं। बाल्यकाल से ही कबीर के चमत्कारिक व्यक्तित्व की आभा हर तरफ फैलने लगी थी। कहते हैं- उनके बालपन में काशी में एकबार जलन रोग फैल गया था। उन्होने रास्ते से गुजर रही बुढी महिला की देह पर धूल डालकर उसकी जलन दूर कर दी थी।

१.७ कविता ः पवन दूत

(क) कवि ने कृष्ण के गुणों का वर्णन किया है । अपने शब्दों में व्याख्य कीजिए

कृष्ण को देखकर तेरे शरीर की गरमी ठंडक में बदल जाएगी । उनकी सुन्दर ऑखें ज्योति से प्रकाशित हैं । उनका शरीर एक मूर्ति समान होगा । उनके सरल वचन अमृत जैसी मीठी होगी । उनका वचन बहुत हो प्यारा है. और अपनी कमर में वस्त्र पहनते हैं जो उनको शोभा देता है । (४)

(ख) चार वाक्यों में बताओं की राधा अपना विरह कैसे बिताऐं ।

राधा की हालत थी जैसे एक बिछड़े हुए चातक की जो बरसात के पानी से प्यास बुझती है । यहॉ राधा प्रेम की प्यासी है । उसके मन में बहुत सी लालसाऍं उठ रही हैं और वह दुख के बोझ से दबी हुई है । वह रोते पागल जैसी हो गई है । (४)

(ग) *"जाते जाते अगर पथ में क्लान्तियों को मिटना " तो तु ज के निकट उसकी क्लान्तियों को मिटाना"*। इसका अर्थ क्या है। अपने शब्दों में समझाइए।

राधा पवन से कहती है कि जब वह कृष्ण के पास जा रहा है तो रास्ते में अगर कोई थका हुआ व्यक्ति मिले तो उसके थकान को मिटाना। उस्के गरम शरीर को ठंडा हवा से छुकर उसके शीर को ठंडक पहुँचाना। जो बहुत हो थकेमान्दे है हवा की सुगंध से उनको खुश करना। (२)

[१०]

अथवा

१.८ **कविता** ः पवन दूत

कवि क्या सन्देश देना चाहते है। पवन दूत के आधार पर कविता का सार अपने शब्दों में लिखिए।

राधा का दिन रोज चिन्ताओं से भरा रहता था। उसकी ऑखों से सदा ऑसू बहते थे ओर वह दुखित और खोई सी दिखायी थी। एक दिन राधा घर में अकेली ऑखों से जब ऑखों से जब ऑसू बहते तब जमीन गीली हो जाती। एक दिन स्वच्छ और ताजी हवा इस घर में बहने लगी। जो खिड़कियों से प्रवेश कर आई थी। यह ताजी हवा अपनी अहक ले कर आयी थी। यह हवा जो घर में वह रही थी। उससे घर खुशबू से भर गया। हवा ने यह चेष्टा की कि राधा का नाम और तन जो दर्द से पीड़ित उस दर्द को मिटावे। जो ऑसू की दूंदे राधा की ऑखों के पास भैजूद थे। पवन ने उन्हें बड़ी कोमलता से उन्हें जमीन पर गिराया। हवा की यह प्यारी कियाएँ राधा को जरा भी पंसद नहीं आई बल्कि ये कियाएँ उनकी दुश्मन जैसी हुई। मेरे प्यारे कृष्ण को मेरे सारे दुख बतलाना और धीरे धीरे उनके चरणों की धूल मेरे लिए लाना। यदि तू मेरे लिए थोड़ा एक लिए थोड़ा एक भी धुल नहीं ला सकेगी। तो मैं अपने दुखित दिल की सांत्वना कैसे दे सकूँगी।

[१०]

प्रश्न २

निम्नलिखित कविता को ध्यानपूर्वक पढ़कर उसपर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में दीजिए।

नवयुवक

ऐ नौजवान ! सुन अमर गान ,पहिचान आप अपने को तू।
ऐ महामहिम , सागर महान , बुद-बुद न जान अपने को तू॥
जी रहे आज है अमरवृन्द , तेरे ही तरल इशारों पर ,
इतना विशाल आकाश थमा ,तेरे ही जय के नारों पर।
आशाओं के सब तार बँधे , तेरी ऑखों के तारों पर ,
तू कहीं आग में कूद पड़े , खिल जाएँ फूल अंगारों पर॥
क्यों चकित , चित्त हो भूल रहा , ऐ बलनिधान , अपने को तू ?
ऐ नौजवान ! सुन अमर गान , पहिचान आप अपने को तू।
तू चाहे तो ऊसर में भी गंगा का सागर लहराए ,
तू चाहे तो सागर अथाह , पल में ऊसर , सा बन जाए॥
तू चाहे रज-कण पर्वत हो , भूकम्प पर्वतों पर धाए ,
तू चाहे तो विदलित भू पर , अमरों का स्वर्ग उतर आए॥
तू विभु का ही प्रति रूप अरे , छोटा न मान अपने को तू ?

ऐ नौजवान ! सुन अमर गान , पहिचान आप अपने को तू॥
तुझमें अतीत के सुफल सभी , तुझमें भविष्य के बीज धरे ,
तेरी सत्ता से रहते हैं , उत्साह कुंज सब हरे-भरे।
तू अखिल शक्ति का धाम युवक , तेरी समता कह कौन करे॥
तू कौन काम कर सका नहीं , तू कहॉ नहीं ,क्या नहीं अरे ?
बस ,एक बार दिखला दे तो ,है विश्व-प्राण अपने को तू।
ऐ नौजवान ! सुन अमर गान ,पहिचान आप अपने को तू॥
यह कॉप उठे संसार कहीं ,उंगली यदि एक उठा दे तू।
गिर जाएँ गगने के तारे भी ,ऑखें यदि लाल दिखा दे तू।
पर्वत भी चुर चूर होवें अपना यदि ध्यान जमा दे तू।
क्योम निष्क्रिय होकर खोता है। जीवन अनमोल बता दे तू॥
वेदान्त तुझे कह रहा ब्रह्म कह जग वितान अपने को तू।
ऐ नौजवान सुन अमर पहिचान आप आपने को तू॥

२.१ कवि नवयुवकों से क्या अपेक्षा रखता है ?

नवयुवक को अपना शकित को पहिचान । वे अगर चाहे कुछ भी कर सकते है । वह यह मत भूलना चाहिए कि उनके पास विशाल अवसर है । (४)

२.२ नवयुवक की शक्ति पर किन शब्दों से वर्णन किया गया है । केवल दो उदाहरण दीजिए ?

तू चाहे तो ऊसर में भी गंगा का सागर लहराए ,
तू चाहे तो सागर अथाह , पल में ऊसर , सा बन जाए ॥ (२)

२.३ पंकितयों का सार अपने शब्दों में लिखों ः

"ऐ नौजवान सुन अमर गान , कह जग वितान अपने को तू "

युवा को कहते है कि वह यह संसार का नियम हमेशा याद रखना कि जगत आप का शक्ति को जानते है । (२)

२.४ समानार्थी शब्द लिखए ः सागर **समुद्र** (२)

[१०]

३०

Candidates must attempt ONE Essay and ONE Contextual question from either section.

भाग ख or भाग ग

भाग ख

प्रश्न तीन

३. निम्नलिखित दो वर्ग में से किन्हीं एक के पूछे गए प्रश्नों का उतर हिन्दी में दीजिए ।

३.१ " आओ अपनी रानी की रक्षा करो । " इस घटना को वर्णन करते हुए कहानी का उद्देश्य परिचय कीजिए ।

अर्गल ki वीर रानी एक बहुत बहादुर रानी थी। वह एक बहुत ही बहादुर राजा की पत्नी थी। वह राजा के महान ख्याल रखा। राजा गौतम मुगल बादशाह के लिए कर का भुगतान करने से इनकार कर दिया। की तुलना में मुगलों के सामाज्य पर हमला किया। दुश्मन पीछे धकेल रहे थे। रानी देखा है कि यह चन्द्रमा ग्रहण था वह जानता था कि यह इस दिन गंगा में स्नान करने के लिए बहुत ही शुभ था। उसने कहा कि वह जाने के लिए और गंगा में स्नान होगा जोर दिया। हालांकि मुगल सेना जानकारी है कि कि अर्गल की रानी गंगा में स्नान कर दिया जाएगा। मुगल सेना क्षेत्र को घेर लिया। वे उसे कब्जा करना चाहता था। रानी उसे स्नान और प्रार्थना पूरी की और के बारे में home. She दुश्मन के लिए एक चेतावनी जारी की, रास्ता साफ करने के लिए या वे परिणामों का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए वापस करने के लिए किया गया था। रानी बहादुरी से लड़े। बहादुर राजपूत पुरुषों रानी मदद के लिए पहुंचे। वे सेना पर वार किया। निर्भय **और** अभयचंद रानी की ओर गए .**The मुगल सेना की ओर से अपने तरीके से लड़ाई लड़ी राजपूतों की संख्या से बढ़ना शुरू कर दिया। मुगल सेना की ओर से अपने तरीके से लड़ाई लड़ी राजपूतों की संख्या से बढ़ना शुरू कर दिया। राजा हमले के बारे में सुना है। उन्होंने कहा कि गंगा के the banks करने के लिए अपनी सेना के साथ रानी resque करने के लिए। राजपूत सेना देखने पर, मुगलों उनके जीवन के लिए भाग गया। रानी महल पहुंचे तो वह रोया। वह** अभयचंद **की बहादुरी के बारे में राजा को बताया। राजा बहादुर** अभयचंद **को अपनी बेटी राजकुमारी से शादी की। रानी उसे बहादुरी के लिए सम्मानित किया गया। यहाँ तक कि क्रूर दुश्मन का सामना करने में, वह बहादुरी से लड़े तक मदद के लिए पहुंचे।**

[२५]

अथवा

३.२ **कहानी ः *महाराणा प्रतापसिंह* निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दीजिए ।**

३.२.१ राणा प्रताप किस के पुत्र थे ?

वे उदयसिंह का पुत्र था । (२)

३.२.२ वे कहॉ राज्य करते थे ?

चित्तौड़ में राज्य करते थे । (२)

३.२.३ प्रतापसिंह के चरित्र पर प्रकाश डालिए । ?

वे शूरवीर तथा देशभक्त थे । वह अकबर की आधीनता स्वीकार न की । उन्होनें यह दृढ़ विचार कर लिया कि हम अकबर के सामने कभी अपना सिर न झुकावेंगे । और जब तक उसके हाथ से अपनी जन्म भूमि का उद्धार न कर लेंगे तब तक भोग विलास के पदार्थो का उपयोग न करेंगे । (६)

३.२.४ उनको किस के साथ युध्द करना पड़ था ?

अकबर ने कई राजपूत राजाओं और एक बड़ी भारी सेना के साथ अपने पुत्र सलीम को मेवाड़ पर चढ़ाई करने के लिए भेजा । (४)

३.२.५ *युध्द के पश्चात प्रतापसिंग के जीवन में क्या हुआ* ?

वह राजधानी छोड़कर जंगलों में रहने लगे ।पर यहॉम् रहकर भी वे मुगल सेना को तंग किया करते थे । उनका मंत्री भामा शाह उनके पास आया और अपनी सब सम्पत्ति दे दिया । आप इस धन से अपने देश का उद्धर कीजिए । (६)

IEB Copyright © 2016

३.२.६ लोग उनका नाम आज तक सम्मान के साथ क्यों लेतो है ।

राजपूतों की सर्वोच्चता एवं स्वतंत्रता के प्रति दृणसंक्लपवान वीर शासक एवं महान देशभक्तमहाराणा प्रताप का नाम इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से अंकित है। महाराणा प्रताप अपने युग के महान व्यक्ति थे। उनके गुणों के कारण सभी उनका सम्मान करते थे।ज्येष्ठ शुक्ल तीज सम्वत् (9 मई)1540 को मेवाड़ के राजा उदय सिंह के घर जन्मे उनके ज्येष्ठ पुत्र महाराणा प्रताप को बचपन से ही अच्छे संस्कार, अस्त्र-शस्त्रों का ज्ञान और धर्म की रक्षा की प्रेरणा अपने माता-पिता से मिली।

सादा जीवन और दयालु स्वभाव वाले महाराणा प्रताप की वीरता और स्वाभिमान तथा देशभक्ति की भावना से अकबर भी बहुत प्रभावित हुआ था। जब मेवाङ की सत्ता राणा प्रताप ने संभाली, तब आधा मेवाङ मुगलों के अधीन था और शेष मेवाङ पर अपना आधिपत्य स्थापित करने के लिये अकबर प्रयासरत था।राजस्थान के कई परिवार अकबर की शक्ति के आगे घुटने टेक चुके थे, किन्तु महाराणा प्रताप अपने वंश को कायम रखने के लिये संघर्ष करते रहे और अकबर के सामने आत्मसर्मपण नही किये।जंगल-जंगल भटकते हुए तृण-मूल व घास-पात की रोटियों में गुजर-बसर कर पत्नी व बच्चे को विकराल परिस्थितियों में अपने साथ रखते हुए भी उन्होंने कभी धैर्य नहीं खोया। पैसे के अभाव में सेना के टूटते हुए मनोबल को पुनर्जीवित करने के लिए दानवीर भामाशाह ने अपना पूरा खजाना समर्पित कर दिया। तो भी, महाराणा प्रताप ने कहा कि सैन्य आवश्यकताओं के अलावा मुझे आपके खजाने की एक पाई भी नहीं चाहिए। अकबर के अनुसारः- महाराणा प्रताप के पास साधन सीमित थे, किन्तु फिर भी वो झुका नही, डरा नही। (५)

[२५]

भाग ग

प्रश्न चार

४. निम्नलिखित दो वर्ग में से किन्हीं **एक** के पूछे गये प्रश्नों का उत्तर हिन्दी में दीजिए ।

४.१ कहानी ः र्निमाला

४.१.१ यह कहानी क्यों "र्निमाला" रखी गयी थीं ।?

पूर्व स्वतंत्र भारत की एक पृष्ठभूमि के खिलाफ सेट निर्मला १९२० के दशक के एक यथार्थवादी और सुरम्य चित्र भाषा और युग के परिवेश को दर्शाया गया है। इ७उ यह दहेज प्रथा की बुराइयों की विशेषता है और

ऐसा करने में करने के लिए लेखक की इच्छा को दर्शाता है सामाजिक सुधार लाने के बारे में और समाज में महिलाओं की स्थिति बढ़ा। लेखक के शब्दों को अपने देश के गरीबों को समझाना और एक स्थिर समाज के बड़े पैमाने पर मिलकर ग्रामीण भारत की एक तस्वीर जातियों के संघर्ष उसकी गरीबी और शोषण और उसके लोगों की समृद्ध चरित्र पेंट। इ८उ उपन्यास की समय अवधि को शामिल किया के बारे में छह साल के दौरान जो समय निर्मला छात्र से पत्नी और उसके बाद एक मां के लिए संक्रमण। यह एक युग था जब आत्मसम्मान और सार्वजनिक छवि समाज में मौलिक महत्व के थे (४)

४.१.२ चन्दर का चरित्र चित्रन कीजिए ?

ऐसे सुन्दर सुडौल बलिष्ठ युवक कालेजों में बहुत कम देखनेमें आते हैं। बिल्कुल माँ को पड़ा था। वही गोरा चिट्टा रंग। वही पतले पतले गुलाब की पत्ती के से ओठं वही चौड़ा माथा। वही ऑखें। ढील डौल बाप का सा था। ऊँचा कोट ब्रीचेज टाई बूट हैड उस पर खूब खिल रहे थे। चाल में जवानी का गरूर था। ऑखों में आत्मगैरव। (४)

४.१.३ बाबू उदयभानू लाल के परिवार का परिचय कीजिए ?

यों तो बाबू उदयभानुलाल के परिवार में बीसों ही प्राणी थे, कोई ममेरा भाई था, कोई फुफेरा, कोई भांजा था, कोई भतीजा, लेकिन यहां हमें उनसे कोई प्रयोजन नहीं, वह अच्छे वकील थे, लक्ष्मी प्रसन्न थीं और कुटुम्ब के दरिद्र प्राणियों को आश्रय देना उनका कत्तव्य ही था। हमारा सम्बन्ध तो केवल उनकी दोनों कन्याओं से है, जिनमें बड़ी का नाम निर्मला और छोटी का कृष्णा था। अभी कल दोनों साथ-साथ गुड़िया खेलती थीं। निर्मला का पन्द्रहवां साल था, कृष्णा का दसवां, फिर भी उनके स्वभाव में कोई विशेष अन्तर न था। दोनों चंचल, खिलाड़िन और सैर-तमाशे पर जान देती थीं। दोनों गुड़िया का धूमधाम से ब्याह करती थीं, सदा काम से जी चुराती थीं। मां पुकारती रहती थी, पर दोनों कोठे पर छिपी बैठी रहती थीं कि न जाने किस काम के लिए बुलाती हैं। दोनों अपने भाइयों से लड़ती थीं, नौकरों को डांटती थीं और बाजे की आवाज सुनते ही द्वार पर आकर खड़ी हो जाती थीं पर आज एकाएक एक ऐसी बात हो गई है, जिसने बड़ी को बड़ी और छोटी को छोटी बना दिया है (४)

४.१.४ कल्यानी और उदयभानू का मित्रता का वर्णन कीजिए ?

उदयभानु न जलकर कहा- जो अब समझ लूं कि मेरे मरने के दिन निकट आ गये, यही तुम्हारी भविष्यवाणी है! सुहाग से स्त्रियों का जी ऊबते नहीं सुना था, आज यह नई बात मालूम हुई। रंडापे में भी कोई सुख होगा ही!

कल्याणी-तुमसे दुनिया की कोई भी बात कही जाती है, तो जहर उगलने लगते हो। इसलिए न कि जानते हो, इसे कहीं टिकना नहीं है, मेरी ही रोटियों पर पड़ी हुई है या और कुछ! जहां कोई बात कही, बस सिर हो गये, मानों मैं घर की लौंडी हूं, मेरा केवल रोटी और कपड़े का नाता है। जितना ही मैं दबती हूं, तुम और भी दबाते हो। मुफ्तखोर माल उड़ायें, कोई मुंह न खोले, शराब-कबाब में रूपये लुटें, कोई जबान न हिलाये। वे सारे कांटे मेरे बच्चों ही के लिए तो बोये जा रहे है।

उदयभानु लाल- तो मैं क्या तुम्हारा गुलाम हूं?

कल्याणी- तो क्या मैं तुम्हारी लौंडी हूं?

उदयभानु लाल- ऐसे मर्द और होंगे, जो औरतों के इशारों पर नाचते हैं।

कल्याणी- तो ऐसी स्त्रियों भी होंगी, जो मर्दों की जूतियां सहा करती हैं।

उदयभानु लाल- मैं कमाकर लाता हूं, जैसे चाहूं खर्च कर सकता हूं। किसी को बोलने का अधिकार नहीं।

कल्याणी- तो आप अपना घर संभलिये! ऐसे घर को मेरा दूर ही से सलाम है, जहां मेरी कोई पूछ नहीं घर में तुम्हारा जितना अधिकार है, उतना ही मेरा भी। इससे जौ भर भी कम नहीं। अगर तुम अपने मन के राजा हो, तो मैं भी अपने मन को रानी हूं। तुम्हारा घर तुम्हें मुबारक रहे, मेरे लिए पेट की रोटियों की कमी नहीं है। तुम्हारे बच्चे हैं, मारो या जिलाओ। न आंखों से देखूंगी, न पीड़ा होगी। आंखें फूटीं, पीर गई! (३)

४.१.५ निर्माला कि अंतिम समय को वणर्न कीजिए ?

निर्मला की सांस बड़े वेग से चलने लगी, फिर खाट पर लेट गई और बच्ची की ओर एक ऐसी दृष्टि से देखा, जो उसके चरित्र जीवन की संपूर्ण विमत्कथा की वृहद् आलोचना थी, वाणी में इतनी सामर्थ्य कहा?

तीन दिनों तक निर्मला की आंखों से आंसुओं की धारा बहती रही। वह न किसी से बोलती थी, न किसी की ओर देखती थी और न किसी का कुछ सुनती थी। बस, रोये चली जाती थी। उस वेदना का कौन अनुमान कर सकता है?

चौथे दिन संध्या समय वह विपत्ति कथा समाप्त हो गई। उसी समय जब पशु-पक्षी अपने-अपने बसेरे को लौट रहे थे, निर्मला का प्राण-पक्षी भी दिन भर शिकारियों के निशानों, शिकारी चिड़ियों के पंजों और वायु के प्रचंड झोंकों से आहत और व्यथित अपने बसेरे की ओर उड़ गया।

मुहल्ले के लोग जमा हो गये। लाश बाहर निकाली गई। कौन दाह करेगा, यह प्रश्न उठा। लोग इसी चिन्ता में थे कि सहसा एक बूढ़ा पथिक एक बकुचा लटकाये आकर खड़ा हो गया। यह मुंशी तोताराम थे। (१०)

[२५]

अथवा

४.२ कहानी ः निर्माला कहानी का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए लिखिए कि लेखक की इस में कहाँ तक सफलता मिली है।

उपन्यास जो लोग इस पुस्तक को पढ़ने से मनोरंजन के एक तत्व के लिए उम्मीद नहीं है। शैली काफी अंधेरा और मलिन है और आप घन्छि है कि आपके सभी उत्साह चोरी होती दे सकता है। इसका मतलब यह नहीं इस किताब को पढ़ने के लायक नहीं है लेकिन यह साहित्यिक काम कमजोर और कमजोर की जान खा कठोर सामाजिक मुद्दों च्व्एन्तुातन्नि के लिए सराहना की भावना है करने के लिए आप की उम्मीद है।

प्रेमचंद अच्छी तरह से पुस्तक में विभिन्न पात्रों के जीवन बुना गया है। यह कैसे एक छोटी सी घटना कोई वास्तव में सभी प्रभावों दूसरों के जीवन के साथ जुड़े पढ़ने के लिए काफी दिलचस्प है। इसके अलावा एक मुखर रास्ते में एक सामाजिक संदेश भेजने से इस किताब को भारतीय समाज दिन में वापस की परछाई के रूप में माना जा सकता है।

"दूसरी पत्नी" की कहानी प्रेमचंद के डेविड रुबिन द्वारा "निर्मला" का अंग्रेजी अनुवाद स्वतंत्रता पूर्व में सेट किया गया है यह अभी भी इतनी ताजा है कि आप आधुनिक समाज के लिए किताब में विभिन्न उदाहरणों से संबंधित हो सकता है किया जा रहा है हालांकि बिट्स और कुछ हिस्सों में। कई बार मैं के साथ समय सीमा सेट अप ३ साल के अंतराल में की तरह एक छात्र के रूप में पहले वर्णित एक चरित्र है बाद में पत्नी और एक बेटे के साथ एक सफल चिकित्सक के रूप में की घोषणा की है प्रेमचंद एक सा लापरवाह पाया। इस कहानी के बारे में कैसे परिवारों एक असमान और अपूर्ण शादी मैच की वजह से नष्ट हो गया है। महिला नायक निर्मला उसके पिता एकमात्र कमाने वाला होने के साथ एक बड़े संयुक्त परिवार में एक सहज और हंसमुख जीवन जी रहा था। लेकिन वहाँ कुछ और उसके भविष्य के गर्भ में जमा हो गया था। बस जब उसके पिता के बारे में उसके लिए एक गठबंधन स्थापित करने के लिए किया गया था वह मर गया। सभी रिश्तेदारों को जो उसके पिता सूखी ल्एएच्छन्नि रहे थे पहले से पलायन करने के लिए जब वह अपने वास्तविक समर्थन की जरूरत थी। उसके लिए जोड़ने के लिए वू लड़का गठबंधन डर है कि वह अपने पिता की मृत्यु के बाद पर्याप्त दहेज नहीं लाना होगा रद्द कर दिया। स्थिति से जबरिया या नहीं बल्कि यह कहा जाना चाहिए निर्मला से छुटकारा पाने के लिए और फिर उसके भाई बहन परवरिश पर ध्यान केंद्रित करने के लिए णरिामल की मां एक बुजुर्ग विधुर टेतारा-को उसकी शादी करती है ३ किशोर आयु वर्ग के बेटों के साथ। अब एक भारी दर्दनाक कहानी उतार भावनात्मक रूप से अपमानजनक रिश्ते के चढ़ाव में लिपटे के एक कथन शुरू होता है।

एक युवा लड़की के लिए हो रही है फिर से शादी कर ली टेताराम का उत्साह ही उसकी संदिग्ध विचारों को अपने मन और दिल पर काबू पाने के गायब हो जाने के शुरू होता है। निर्मला टेताराम के ज्येष्ठ पुत्र की ही उम्र का था लेकिन जल्द ही शादी के बाद उसके प्रति मातृत्व स्नेह वृद्धि हुई है। टेताराम के रूप में व्यभिचार यह मानते है जो टूट गया और हद तक अपने बेटे को तोड़ दिया है कि इस तीव्र दुः ख उसकी जान ले ली। इस घटना निर्मला एक मजेदार प्यार चरित्र उपन्यास पूरी तरह से कठोर और आवेगहीन में पहले बताया बदल गया। टेताराम के ज्येष्ठ पुत्र की मौत एक दुस्साहसिक और विद्रोही बच्चे में अपने दूसरे बेटे को बदल दिया। घटनाओं ऐसी है कि वह आत्महत्या कर ली और टेताराम के सबसे छोटे बेटे को हमेशा के लिए घर छोड़ देते हैं। अपने बेटों की मौत से व्यथित टेताराम के काम में उनकी रुचि खो दिया है और अपने कैरियर में एक डुबकी कि वह भी अपने परिवार के लिए एक दिन में ३ बार भोजन की व्यवस्था नहीं कर सका लिया। अत्यधिक उसके जीवन से निराश है उसे करने के लिए दिखाया गया था निर्मला जीवन के लिए सभी उत्साह और उत्साह खो दिया है। बाद में वह भी भ्रष्ट पितृसत्तात्मक समाज के लिए एक विदाई बोली।

एक समझने के लिए उस किताब २० वीं सदी के मोड़ पर लिखा गया था जब बाल विवाह दहेज प्रथा आदि जैसे मुद्दों युवा लड़कियों के विवाह के लिए मजबूर किया पीड़ा और निराशा में महिलाओं के जीवन का आयोजन किया गया है। प्रेमचंद संवेदनशीलता एारतहन्एिस साथ उन दिनों के दौरान समाज में व्याप्त महिलाओं के प्रति अन्याय के मुद्दे पर छुआ। यह एक सभी समय क्लासिक है और इसे पढ़ने के लिए हर किसी की सिफारिश करेंगे।

[२५]

५०

Total: ८०

IEB Copyright © 2016